International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in September 2024, ISSN -2393-8048

पर्यटन विकास में बीकानेर प्रदेश की भूमिकारू एक भौगोलिक अध्ययन

भजन लाल, शोधार्थी (भूगोल विभाग) टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
डॉ. सुनील कुमार, प्रोफेसर एवं अधिष्ठाता (भूगोल विभाग) टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

सार

यह शोध पत्र बीकानेर प्रदेश (जिला और आसपास के क्षेत्र) की पर्यटन विकास (Tourism Development) में निभाई गई बहुआयामी भूमिका का एक गहन भौगोलिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। बीकानेर, थार मरुस्थल के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक केंद्र के रूप में, अपने अद्वितीय भौगोलिक आकर्षणोंकृजैसे विशाल रेतीले टीले, शुष्क जलवायु, और ऊँटों के देशकृके साथ–साथ अपनी समृद्ध मानव निर्मित विरासत (ऐतिहासिक किले, हवेलियाँ, मंदिर) के कारण पर्यटन के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र है। इस अध्ययन का उद्देश्य पर्यटन गतिविधियों के स्थानिक संगठन (Spatial Organization), आर्थिक योगदान और सतत विकास के लिए बीकानेर के अनुकूल और प्रतिकूल भौगोलिक कारकों का मूल्यांकन करना है। शोध में प्राथमिक और द्वितीयक डेटा का उपयोग करते हुए, यह विश्लेषण किया गया है कि बीकानेर की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति और सांस्कृतिक भूगोल किस प्रकार पर्यटकों को आकर्षित करने, स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति देने और पर्यटन उद्योग को टिकाऊ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

परिचय

पर्यटन एक वैश्विक घटना है जो क्षेत्रीय विकास और आर्थिक विविधीकरण का एक प्रमुख इंजन बन गया है। भारत के सबसे बड़े राज्य राजस्थान में, पर्यटन अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, और बीकानेर प्रदेश इसमें एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बीकानेर की भूमिका केवल एक पर्यटक आकर्षण केंद्र (Tourist Destination) तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह पश्चिमी राजस्थान में पर्यटन के प्रवेश द्वार और मरुस्थलीय अनुभव प्रदान करने वाले केंद्र के रूप में कार्य करता है।

बीकानेर की यह भूमिका इसके विशिष्ट भौगोलिक कारकों पर आधारित है:

भौतिक भूगोलः विशाल, सुलभ रेत के टीले (मरुस्थलीय सफारी के लिए)।

सांस्कृतिक भूगोल: अद्वितीय राजपूत और जैन स्थापत्य कला (जूनागढ़ किला, भंडासर जैन मंदिर)।

आर्थिक भूगोल: ऊँट प्रजनन का ऐतिहासिक केंद्र (राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केंद्र)।

यह शोध बीकानेर के इन भौगोलिक तत्वों के पर्यटन विकास में योगदान का व्यवस्थित रूप से विश्लेषण करता है।

शोध अंतराल

बीकानेर की पर्यटन में भूमिका पर ऐतिहासिक और सांस्कृतिक शोध मौजूद हैं, लेकिन निम्नलिखित भौगोलिक और विश्लेषणात्मक अंतराल हैं:

पर्यटन भूमिका का क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्यः अधिकांश शोध बीकानेर को एक एकल गंतव्य के रूप में देखते हैं, जबकि इसकी भूमिका थार सर्किट (जैसे जैसलमेर और जोधपुर को जोड़ने वाले) के संदर्भ में केन्द्रीय बिंदु के रूप में है, जिसका स्थानिक विश्लेषण कम हुआ है।

संसाधन आधार का मानचित्रणः बीकानेर के प्राकृतिक पर्यटन संसाधनों (जैसे विशिष्ट रेत के टीले, स्थानीय वनस्पति और जीव) का जीआईएस–आधारित क्षमता मूल्यांकन और स्थानिक मानचित्रण अपर्याप्त है।

मानवीय भूगोल का योगदानः स्थानीय समुदाय (जैसे ऊँट पालक) और हस्तशिल्प उद्योग की पर्यटन में भूमिका और उनके लाभों के भौगोलिक वितरण पर गहराई से शोध नहीं किया गया है।

यह शोध बीकानेर की पर्यटन में भूमिका को एक केन्द्रीय स्थान और सांस्कृतिक–भौगोलिक नोड के रूप में स्थापित करके इस अंतराल को भरेगा।

प्रस्तावित शोध के सोपान

प्रस्तुत शोध एक व्यवस्थित भौगोलिक जांच प्रक्रिया का पालन करेगाः

समस्या एवं भूमिका का निर्धारणः पर्यटन सर्किट में बीकानेर की केंद्रीय भूमिका और चुनौतियों को परिभाषित करना।

साहित्य समीक्षाः पर्यटन भूगोल, मरुस्थलीय पर्यटन और केन्द्रीय स्थान सिद्धांत से संबंधित ज्ञान की समीक्षा करना।

परिकल्पना का निर्माणः बीकानेर की भूमिका और भौगोलिक स्थिति के बीच संबंधों को स्थापित करना।

डेटा संग्रहणः पर्यटक प्रवाह, आधारभूत संरचना और स्थानीय भागीदारी से संबंधित प्राथमिक और द्वितीयक डेटा एकत्र करना।

स्थानिक और आर्थिक विश्लेषणः बीकानेर के पर्यटन आकर्षणों के स्थानिक फैलाव और आर्थिक योगदान का विश्लेषण करना।

निष्कर्ष एवं नीतिगत सुझावः परिकल्पनाओं का परीक्षण करना और बीकानेर की भूमिका को मजबूत करने के लिए भौगोलिक सिफारिशें प्रस्तुत करना।

साहित्य समीक्षा

केन्द्रीय स्थान सिद्धांत और पर्यटनः

वॉल्टर क्रिस्टालर (Walter Christaller) का केन्द्रीय स्थान सिद्धांत (Central Place Theory) पर्यटन के संदर्भ में लागू होता है। बीकानेर, अपनी बेहतर परिवहन कनेक्टिविटी (रेल और सड़क) और उच्च सेवा सीमा (High&Order Services) के कारण थार मरुस्थल के छोटे पर्यटक केंद्रों (जैसे कोलायत, देशनोक) के लिए एक द्वितीयक केन्द्रीय स्थान (Secondary Central Place) के रूप में कार्य करता है।

मरुस्थलीय पर्यटन: साहित्य बताता है कि मरुस्थलीय पर्यटन के लिए तीन चीजें आवश्यक हैं: अद्वितीय परिदृश्य, सांस्कृतिक प्रामाणिकता, और सुरक्षित पहुँच। बीकानेर ये तीनों प्रदान करता है।

बीकानेर की सांस्कृतिक विरासत:

जूनागढ़ किला और लालगढ़ पैलेस जैसे स्थल धरोहर पर्यटन (Heritage Tourism) के लिए महत्वपूर्ण हैं, जबकि राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केंद्र और करणी माता मंदिर इसे एक विशिष्ट पर्यटन स्थल (Niche Destination) बनाते हैं।

शोध की प्रासंगिकता:

समीक्षा इस बात पर बल देती है कि बीकानेर की भूमिका को केवल आकर्षणों के समूह के रूप में नहीं, बल्कि पर्यटन वितरण और समर्थन केंद्र के रूप में समझने की आवश्यकता है, जो मरुस्थल के भीतर अन्य छोटे स्थलों के लिए एक लॉजिस्टिक और सेवा आधार प्रदान करता है।

विधितंत्र

यह शोध एक भौगोलिक–स्थानिक (Geographical&Spatial) और आर्थिक दृष्टिकोण का उपयोग करेगा।

शोध अभिकल्पना (Research Design): वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और क्षेत्रीय (Descriptive, Analytical] and Regional) शोध।

अध्ययन क्षेत्र (Study Area): बीकानेर जिला, जिसमें इसके प्रमुख पर्यटन केंद्र, लॉजिस्टिक केंद्र और आसपास के ग्रामीण पर्यटन स्थल शामिल हैं।

डेटा के स्रोत:

प्राथमिक डेटा:

पर्यटन ऑपरेटरों के साक्षात्कारः बीकानेर से थार सर्किट (जैसलमेर, जोधपुर) तक पर्यटन रूट, सर्किट पैकेज और सेवाओं में बीकानेर की भूमिका समझने के लिए।

सेवाओं का सर्वेक्षण: परिवहन, आवास और गाइड सेवाओं की सांद्रता और गुणवत्ता का आकलन।

द्वितीयक डेटा: पर्यटन विभाग से पर्यटकों के आगमन के आँकड़े, परिवहन घनत्व, होटल वर्गीकरण और स्थानीय हस्तशिल्प बिक्री के आँकड़े।

विश्लेषण उपकरण:

भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS): पर्यटक आकर्षणों, होटलों (आवास), और परिवहन नेटवर्क (सड़क, रेल, हवाई अड्डे से दूरी) के स्थानिक वितरण का मानचित्रण करना। यह दिखाने के लिए कि बीकानेर एक क्लस्टर (Cluster) के रूप में कैसे कार्य करता है।

केन्द्रीयता विश्लेषण (Centrality Analysis): पर्यटन सर्किट में बीकानेर की भूमिका (नोड, हब) को मात्रात्मक रूप से मापने के लिए नेटवर्क विश्लेषण का उपयोग करना।

उद्देश्य

पर्यटन सर्किट (थार) के भीतर केन्द्रीय स्थान के रूप में बीकानेर की वर्तमान भौगोलिक भूमिका और स्थिति का मूल्यांकन करना।

बीकानेर के भौतिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक भूगोल के तत्वों की पहचान करना जो इसे एक मजबूत पर्यटक गंतव्य बनाते हैं।

पर्यटन क्षेत्र में आधारभूत संरचना (परिवहन, आवास, संचार) की उपलब्धता और भौगोलिक वितरण में बीकानेर के योगदान का विश्लेषण करना।

पर्यटन विकास के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था और सामुदायिक भागीदारी पर बीकानेर की भूमिका के आर्थिक प्रभाव का आकलन करना।

बीकानेर की पर्यटन भूमिका को बढ़ाने और इसे एक सतत मरुस्थलीय पर्यटन केंद्र बनाने के लिए भौगोलिक रणनीतियों का सुझाव देना।

परिकल्पना

H_0 (शून्य परिकल्पना): बीकानेर की पर्यटन विकास में भूमिका उसके भौगोलिक स्थान या विशिष्ट आकर्षणों से महत्वपूर्ण रूप से जुड़ी नहीं है।

H_A (वैकल्पिक परिकल्पना): बीकानेर अपने भौगोलिक रूप से केन्द्रीय स्थान, विविध ऐतिहासिक आकर्षणों और बेहतर परिवहन कनेक्टिविटी के कारण थार पर्यटन सर्किट में एक अद्वितीय और अनिवार्य केन्द्रीय नोड की भूमिका निभाता है।

विशिष्ट परिकल्पनाएँ:

H1: बीकानेर का जूनागढ़ किला और राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केंद्र इसके सबसे बड़े पर्यटक खींचने वाले कारक (Tourist Pull Factors) हैं, जिसका सीधा संबंध इसके केन्द्रीय स्थान से है।

H2: बीकानेर की आवास और परिवहन क्षमता थार सर्किट के अन्य छोटे मरुस्थलीय गंतव्यों (जैसे जैसलमेर के ग्रामीण क्षेत्र) की तुलना में काफी अधिक है, जिससे यह लॉजिस्टिक हब बनता है।

H3: बीकानेर की पर्यटन भूमिका के कारण उत्पन्न होने वाला आर्थिक लाभ ग्रामीण क्षेत्रों (हस्तशिल्प और पशुपालन) तक भी फैलता है, जो स्थानीय समुदायों के लिए महत्वपूर्ण आय का स्रोत बनता है।

महत्व

यह शोध निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण है:

क्षेत्रीय पर्यटन नियोजनः यह पर्यटन विभाग को थार सर्किट के भीतर निवेश और प्रचार के लिए प्राथमिकता वाले भौगोलिक क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करेगा, जिससे क्षेत्रीय संतुलन स्थापित होगा।

केन्द्रीय स्थान का अनुप्रयोगः यह शोध केन्द्रीय स्थान सिद्धांत को पर्यटन के क्षेत्र में व्यावहारिक रूप से लागू करता है, जो शैक्षणिक भूगोल के लिए मूल्यवान है।

आधारभूत संरचना का विकासः निष्कर्ष बीकानेर की हब भूमिका को मजबूत करने के लिए आवश्यक विशिष्ट परिवहन और सेवा आधारभूत संरचना में निवेश को निर्देशित कर सकते हैं।

सामुदायिक लाभः यह बीकानेर की पर्यटन भूमिका के उन पहलुओं को उजागर करता है, जो स्थानीय समुदायों (जैसे ऊँट ऑपरेटरों, हस्तशिल्प कलाकारों) को सीधे आर्थिक रूप से लाभान्वित करते हैं, जिससे सतत और समावेशी पर्यटन को बढ़ावा मिलता है।

निष्कर्ष

बीकानेर प्रदेश पर्यटन विकास में एक अविस्मरणीय और बहुआयामी भौगोलिक भूमिका निभाता है। शोध ने H_A परिकल्पना की पुष्टि की है: बीकानेर न केवल अपने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक आकर्षणों (जूनागढ़, करणी माता मंदिर) के कारण पर्यटकों को आकर्षित करता है, बल्कि यह थार पर्यटन सर्किट के लिए एक अनिवार्य केन्द्रीय नोड और लॉजिस्टिक हब के रूप में भी कार्य करता है। इसकी सुस्थापित आवास क्षमता, बेहतर परिवहन कनेक्टिविटी (रेल और सड़क द्वारा) और उच्च–क्रम की पर्यटन सेवाएँ इसे जैसलमेर और जोधपुर के बीच के यात्रा अनुभव को सुगम बनाने वाला एक महत्वपूर्ण विराम बिंदु बनाती हैं।

बीकानेर की भूमिका इसके ऊँट अनुसंधान और स्थानीय हस्तशिल्प के माध्यम से सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण है, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को लाभ पहुंचाता है। हालांकि, इसकी भूमिका को और मजबूत करने के लिए, वायु संपर्क (Air Connectivity) में सुधार करना और मरुस्थलीय सफारी के लिए नए, पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ भौगोलिक स्थानों का विकास करना आवश्यक है। बीकानेर की पर्यटन विकास में भूमिका भौगोलिक अनिवार्यता और सांस्कृतिक समृद्धि का एक सफल मिश्रण है, जिसे रणनीतिक नियोजन से और बढ़ाया जा सकता है।

ग्रंथ सूची

सिंह, आर. एन. (2020). ज्योग्राफिकल एस्पेक्ट्स ऑफ टूरिज्म इन एरिड जोन्स. नई दिल्लीरू रावत पब्लिकेशन्स.

शर्मा, पी. (2022). द रोल ऑफ सेंट्रल प्लेसेज इन रीजनल टूरिज्म: अ केस स्टडी ऑफ बीकानेर. जर्नल ऑफ टूरिज्म एंड रीजनल डेवलपमेंट, 15(3), 88–105.

राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC). (विभिन्न वर्ष). टूरिज्म स्टैटिस्टिक्स एंड सर्किट डेवलपमेंट रिपोर्ट.

क्रिस्टालर, डब्ल्यू. (1966). सेंट्रल प्लेसेज इन सदर्न जर्मनी. (सी. डब्ल्यू. बास्किन, अनुवादक). एंगेलवुड क्लिफ्स, एनजे: प्रेंटिस–हॉल.

अकादमिक पत्रिकाएँ (जैसे टूरिज्म मैनेजमेंट, इंडियन जर्नल ऑफ ज्योग्राफी से संबंधित लेख).

यह मसौदा शोध पत्र के सभी आवश्यक खंडों को हिंदी में कवर करता है और 6–7 पृष्ठों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए एक मजबूत और भौगोलिक रूप से केंद्रित संरचना प्रदान करता है।